MINOR RESEARCH PROJECT OF UNIVERSITY GRANTS COMMISSION (XII PLAN : 2012-2017)

BY
DR. SUREKHABEN K.PATEL
DEPARTMENT OF SANSKRIT
G.D.MODI COLLEGE OF ARTS, PALANPUR.

" ACHARYA HEMCHANDRA'S (LAGHU) ARHANNITI : A STUDY"

(DURATION: 2014- 2016)

1. Title Of The Project " **Acharya Hemchandra's (Laghu) Arhanniti : A Study"**
2. Name And Address Of The Principal Investigator: Dr. Surekhaben K. Patel. 1,Vinayakpark, Jampura Road, Palanpur.
3. Name And Address Of The Institution : G. D. Modi College of Arts, Palanpur
4. UGC Approval Letter No. 23-707/13(WRO) and Date: 30/05/2014
5. Date of Implementation 01/06/2014
6. Tenure of The Project Two Years
7. Total Grant Allocated 1,30,000/-
8. Total Grant Received 1,05,000/-
9. Final Expenditure 1,30,275/-
10. Title Of The Project "**Acharya Hemchandra's (Laghu) Arhanniti : A Study"**
11. Objectives of the Project:

    - To study the chapter Rajdharm consisting in the first two chapter of "(Laghu)Arhanniti".
    - What is the meaning of ethics? its characteristics, kind of ethics, difference of ethics, sort of claims, Court Procedure, Complaint, answer of accused, members helpful to the Justice, Jury and Four type of evidence "(Laghu)Arhanniti".
    - To study the body of various claims.
    - To study heirs chapter in "(Laghu)Arhanniti"..
    - To study Male-Female relations in "(Laghu)Arhanniti".

    Above subjects should be read and review of Yagnyavalkya smruti (with reference of possible Mitaxara) ,Manu smruti and Shukrniti etc.

12. Whether Objectives Were Achieved

- To study "(Laghu) Arhannti's Prayaschit Chepter (7)" related with human life,
- Importance of "(Laghu) Arhanniti" according to Hindu & Jain Religion.
- Importance of "(Laghu) Arhanniti- Stree Purush Dharm & Prayaschit " According to present Scenario.

13. Achievements From The Project Attached Enclosure:1
14. Summary of The Findings Attached Enclosure:2 (In 500 Words)
15. Contribution to The Society : Attached Enclosure:3 (Give Details)
16. Whether Any Ph.D. Enrolled/Produced Out Of The Project -Nil
17. No. Of Publications Out of the Project –Yes. I have prepared 4 (four) Article from this recent minor project. From out of 4 Article I presented 3 (three) Articles in National Seminars.(Enclosure:4)

ENCLOSURE: 1

[13] Achievements from the Projects :

हजारों साल पहले मनुस्मृति, याज्ञवल्कय स्मृति, कौटिलीय अर्थशास्त्र, चाणक्य-नीतिशास्त्र आदि धर्मशास्त्र और अर्थशास्त्र के ग्रन्थों की तरह इस '(लघु)अर्हन्नीति' ग्रन्थ में भी राजनीति, समाजशास्त्र (धर्मशास्त्र) के साथ -साथ कानूनी विषय की चर्चा कविने की है। सामाजिक दृष्टिसे देखें तो मनुष्य जीवन में उपयोगी स्त्री-पुरुषधर्म, प्रायश्चित आदि कई मूल्य इस ग्रन्थ में भरें पडे है। 'भूमिका भूपाल आदि गुणवर्णन', 'युध्ध और दण्डनीति' जैसे विषय पर कविने जो बिचार प्रस्तुत किए है, वह प्रवर्तमान प्रशासन के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। 'दायभाग' 'व्यवहारनीति' और व्यवहार के कई भेद में भी कानूनी विषयों की चर्चा मिलती है, वह प्रवर्तमान कानून में सहायक बन सकते है। इस लिए इस ग्रन्थ कई तरह से समाजोपयोगी बन सकता है। जिसका अध्ययन महत्त्वपूर्ण सिध्ध हो सकता है। '(लघु)अर्हन्नीति' में जिस विषयों की चर्चा की है, उनमें हेमचन्द्राचार्यजी प्राय: अपने पूर्वाचार्यो मनु, याज्ञवल्कय, कौटिल्य आदि से प्रभावित नजर आते है।

ENCLOSURE: 2

[14] Summary of the findings : (500 word):

''**हेमचन्द्राचार्यविरचित्त** '(लघु)**अर्हन्नीति': एक अभ्यास**'' यह प्रोजेक्ट के आरंभ में अनुक्रमणिका दी गई है, जिसमें सात प्रकरण, उपसंहार, परिशिष्ट और सन्दर्भग्रन्थ सूचि का उल्लेख किया गया है। उसके बाद प्राक्कथन और सहायक सन्दर्भग्रन्थों की संक्षेपसूचि रखी गई है।

आचार्य हेमचन्द्रका '**जीवन-समय-कवन**' नामक **प्रथम प्रकरण** की प्रस्तावना में हेमकुमार चरित्र, प्रबन्धचिन्तामणि, कुमारपाण चरित्र आदि तेरह जितने ग्रंथो के आधार पर हेमचन्द्राचार्य के जीवन वृत्त देने का प्रयास किया गया है, जिसमें आचार्यपदकी प्राप्ति, सिद्धराज जयसिंह के साथ संपर्क, कुमारपाल राजा के साथ सम्बन्ध और उनके मृत्यु तक की चर्चा की गई है। इसके अलावा हेमचन्द्राचार्य के साहित्यसर्जन में कोशग्रंथ, साहित्यग्रंथ, न्यायशास्त्र के ग्रन्थ, इतिहासकाव्य ग्रन्थ, योग सम्बन्धित ग्रंथ, स्तुतिग्रंथ और नीतिशास्त्र विषयक '(लघु)अर्हन्नीति' का विस्तृत परिचय दिया गया है।

'**धर्मशास्त्र और अर्थशास्त्र के ग्रन्थों का (संक्षिप्त) परिचय**' नामक **द्वितीय प्रकरण** के प्रारंभ में 'धर्म' शब्दकी व्याख्या 'महाभारत', 'ऋग्वेद', 'छान्दोग्य उपनिषद', 'तैत्तिरीय उपनिषद', 'मनुस्मृति', 'याज्ञवल्कयस्मृति', 'भगवद्गीता' आदि ग्रन्थों के आधार पर देने का प्रयास किया गया है।

'(लघु)अर्हन्नीति', धर्मशास्त्र और अर्थशास्त्र सम्बन्धित ग्रंथ होने के नाते मनुस्मृति, याज्ञवल्कय स्मृति, पाराशर स्मृति, उशनास्मृति आदि स्मृतिग्रन्थ और गौतम, बौधायन, आपस्तम्ब, हिरण्यकेशि आदि धर्मसूत्रग्रंथो का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। इसके अलावा कौटिलीय 'अर्थशास्त्रम्', कामंदकीय 'नीतिसार', सोमदेवसूरिकृत 'नीतिवाक्यामृतम्', वैशंमपायन कृत 'नीति प्रकाशिका', चण्डेश्वर कृत 'राजनीतिरत्नाकर' आदि राजनीति विषयक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है।

राजधर्म विचार नामक **तृतीय** प्रकरण में भूमिकाभूपाल आदि गुण वर्णन में राजा के गुण, राजा के नियम, राजा को नीति उपदेश, राजा के पांच यज्ञ, प्रजापालन का उपदेश, सर्वअधिकारी वर्ग को उपदेश, दूत के लक्षण- कर्तव्य और 'युध्ध-दण्डनीति' संदर्भ में मंत्रणा, त्रिविधनीति, षड्गुणों का लक्षण और कालोचित प्रयोग, सामादि भेद के लक्षण, युध्ध के समय पर राजा और दूत के कर्तव्य, विविध स्थल पर युद्ध की नीति, शत्रु को उत्पीडन, विजय के बाद युध्ध सामग्री का वितरण आदि की चर्चा की गई है।

आचार्य हेमचन्द्रजीने उपर्युक्त जो विषय की चर्चा है उस सन्दर्भ में कौटिल्य, मनु, याज्ञवल्कय (शकयत: मिताक्षरा) शुक्राचार्य आदि के शक्यत: मतो का उल्लेख करके समीक्षा की गई है।

'**व्यवहारनीति' (विधि) और विविध वाद (विवादों)**' नामक **चतुर्थ** प्रकरण में व्यवहार की परिभाषा और परिचय देकर हेमचन्द्राचार्य वर्णित व्यवहार का स्वरुप और ऋणादान, सम्भूयोत्थान, देयविधि, सीमाविवाद, वेतनादान,

क्रयेतरानुसंताप, स्वामिमृत्यविवाद, निक्षेप, अस्वामिविक्रय, वाक्पारुष्य, स्त्रीसंग्रह, द्यूत, स्तैन्य, साहस, दण्डपारूष्य आदि (दायभाग और स्त्री-पुरुषधर्म विवाद के अलावा) सोलह प्रकार के विविध प्रकार के वाद (विवाद)की चर्चा की गई है।

उपर्युक्त 'विविध वाद' और 'व्यवहार' के सन्दर्भ में मनु, कौटिल्य, याज्ञवल्कय, शुक्राचार्य, नारद, गौतम आदि प्राचीन आचार्यो के शक्यतः मतों का उल्लेख करके समीक्षा की गई है। कहीं कहीं 'ऋग्वेद', 'अथर्ववेद' जैसे प्राचीन ग्रन्थो के उदाहरण भी रखें गए है। इस ग्रन्थ में व्यवहार और विविध प्रकार के वाद की चर्चा मिलती है। जो कई वाद में दीवानी और फौजदारी प्रकार के वाद का उल्लेख मिलता है, इसीलिए वर्तमान कानून में उल्लिखित दण्ड का प्रावधान का भी शक्यतः उल्लेख किया गया है।

'(लघु)अर्हन्नीति' में दायभाग' नामक- **पाँचवे** प्रकरण के प्रारंभ में ऋग्वेद (सायणाचार्य) 'अथर्ववेद', 'तैत्तिरीय संहिता' 'याज्ञवल्कयस्मृति' (मिताक्षरा), 'बृहस्पति', 'निरुक्तकार' आदि ग्रन्थकारों ने दी हुई 'दाय' शब्दार्थ की व्याख्या और गौतम, मनु, कौटिल्य, वसिष्ठ, याज्ञवल्कय आदिने दी हुई 'दायभाग' शब्दार्थ की व्याख्या दी गई है। इसके अलावा हेमचन्द्रजी वर्णित 'स्थावर' और 'जंगम' संपत्ति का उल्लेख किया है। तदुपरांत विविध प्रकारकी संपत्ति के अधिकारी अर्थात् वारसदारों के अधिकारों के बारे में भी चर्चा की गई है। जैनधर्म सिन्द्धान्त में कहें गए पाँच प्रकार के पुत्रों के लक्षण और पर (अन्य) धर्म में कहे गए आठ प्रकार के पुत्रों के लक्षण आदि की भी चर्चा की गई है।

'दायभाग' के बारे में मनु, याज्ञवल्कय, नारद, कौटिल्य, जैसे हेमचन्द्र के पूर्वाचार्यो के दायभाग के बारे में शक्यतः सन्दर्भ देकर समीक्षा की गई है, और वर्तमान कानून में दायभाग का जो प्रावधान है, उसका भी शक्यतः उल्लेख किया गया है।

'स्त्री-पुरुष के धर्म' नामक **छहवें** प्रकरण के आरंभ में मनु, याज्ञवल्कय आदि पूर्वाचार्योंने दी हुई 'स्त्री-पुरुषधर्म' और 'स्त्री के विविध पर्यायवाची शब्दों' की व्याख्याओं का निर्देश करके हेमचन्द्राचार्य वर्णित 'स्त्री-पुरुषधर्म' की चर्चा की गई है। यहाँ इस विषय में हेमचन्द्रजी पूर्वाचार्यो से प्रायः प्रभावित दीखाई देते है। 'स्त्रीधर्म' के बारें कवि का जो कथन है उससे वह जैनधर्म के बडे आग्रही और पालनकर्ता होगें, ऐसा प्रतीत होता है।

'प्रायश्चित विचार' नामक **सातवें** प्रकरण के प्रारंभ में कई पूर्वाचार्योंने दी हुई 'प्रायश्चित' की विभावना स्पष्ट करके हेमचन्द्रजी वर्णित प्रायश्चित की चर्चा की गई है।

'प्रायश्चित' के बारे में मनु, याज्ञवल्कय, गौतम, आदि आचार्यो का शक्यतः सन्दर्भ देकर समीक्षा की गई है, और वर्तमान समय में प्रायश्चित विचार की उपादेयता (प्रासंगिकता) बताने का प्रयास किया गया है। इस प्रायश्चित प्रकरण में जो विचार प्रस्तुत किए है, उसमें कवि जैनधर्म से पूर्णतया प्रभावित है ऐसा प्रतीत होता है।

'उपसंहार' से पहले हेमचन्द्राचार्य का संदिग्ध माना गया '(लघु)अर्हन्नीति' ग्रन्थ का (कुछ आधार के बल पर) कर्तुत्व सिद्धकरने का प्रयास किया गया है। तदुपरांत, हिन्दु और जैनधर्म की दृष्टि से (लघु) अर्हन्नीति ग्रन्थ की उपादेयता (प्रासंगिकता), राजकीय, सामाजिक, कानूनी दृष्टि से प्रवर्तमान समय में '(लघु)अर्हन्नीति' का महत्त्व आदि बताने का प्रयत्न किया गया है।

'उपसंहार' में सात प्रकरणों का संक्षिप्त सारांश देने का प्रयास किया गया है। उसके बाद आठ परिशिष्ठ दिये गए है, उसमें **'प्रथम परिशिष्ट'** में हेमचन्द्राचार्य की प्रशस्ति के कुछ श्लोक रखें गए है। **'द्वितीय परिशिष्ट'** में कलिकालसर्वज्ञ

हेमचन्द्राचार्य को विद्वतवर्गने जो भावपूर्ण अंजलि दी है, उसका वर्णन है। '**तीसरे परिशिष्ट**' में कविश्री हेमचन्द्रजीने '(लघु)अर्हन्नीति' में चौबीस तीर्थंकर की स्तुति की है, वह बताया गया है। '**चतुर्थ परिशिष्ट**' में '(लघु)अर्हन्नीति' अंतर्गत 'बृहद्र्हन्नीति' ग्रंथ के जो उद्धरण दिए है, वह संदर्भ दिया गया है। '**पाँचवे परिशिष्ट**' में '(लघु)अर्हन्नीति' के कर्तुत्व का निश्चय कर सके इसके लिए (लघु)अर्हन्नीति' ग्रन्थ की चारों अधिकारो की पुष्पिकाएँ रखी गई है। '**छहवें परिशिष्ट**' में हेमचन्द्र, मनु, कौटिल्य, याज्ञवल्कय, नारद, बृहस्पति आदि के व्यवहारपदों के क्रम की तुलनात्मक सारणी रखी गई है। '**सातवें परिशिष्ट**' में '(लघु)अर्हन्नीति' ग्रंथ की श्लोक (पद्य) संख्या रखी गई है। '**आठवें परिशिष्ट**' में (लघु) अर्हन्नीति ग्रन्थ में युद्ध की विविध व्यूहरचनाएँ कविने बताई है, उसमें से कई व्यूहरचना चित्र के साथ बताने का प्रयास किया गया है। अन्त में संस्कृत, गुजराती, हिन्दी और कानून विषयक ग्रंथ, कोशग्रन्थ आदि संदर्भग्रन्थ की सूचि दी गई है।

ENCLOUSER: 3

[15] Contribution of the society:

आचार्य हेमचन्द्राचार्य कृत '(लघु)अर्हन्नीति' ग्रन्थ में राजनीति समाजशास्त्र (धर्मशास्त्र) और कानून विषय की चर्चा मिलती है।

ग्रन्थ के आरंभ में ही कविने ग्रन्थ का प्रयोजन स्पष्ट करते हुए कहा है कि-'परस्पर के व्यवहार में लोग ऐसा बर्ताव करें कि सामनेवाले मनुष्य का नुकशान भी न हो और अपना कल्याण हो। ऐसा सत्शास्त्र की में रचना करता हूँ' कवि का ग्रन्थरचना का आशय ही स्पष्ट बताता है कि समाज में लोगों के आचरण हेतु यह ग्रन्थ लिखा गया है। अर्थात् यह ग्रन्थ मानवमात्र को उपयोगी बन सके वह कवि को अभिप्रेत था।

- '(लघु)अर्हन्नीति' ग्रन्थ के प्रथम और दूसरे अधिकार में कविने 'राजधर्म' सम्बन्धी बिचार प्रस्तुत किए है, वह प्रवर्तमान राजनीतिमें उपकारक सिद्ध हो सकते है।
- हिन्दुशास्त्रों और जैनशास्त्रों की दृष्टिसेभी '(लघु)अर्हन्नीति' का अध्ययन आवश्यक है।
- '(लघु)अर्हन्नीति' ग्रन्थ के 'व्यवहारनीति' नामक तीसरे अधिकार में 'स्त्री-पुरुषधर्म' और चतुर्थ अधिकार का 'प्रायश्चित' विधान समाज में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है।
- 'व्यवहारनीति' अधिकार में वर्णित व्यवहार के विविध भेद, दायभाग आदि विचार प्रवर्तमान कानूनी परिस्थिति में सहायक बन सकते है।
- (लघु)अर्हन्नीति ग्रन्थ में तत्कालिन राज्यव्यवस्था नीति-नियम, सामाजिक संरचना, वर्णव्यवस्था, स्त्रियों का स्थान जैसे कई विषयों पर महत्त्वपूर्ण बिचार कविने प्रस्तुत किये है, इसीलिए यह ग्रन्थ जिज्ञासुओं को कई तरह से उपयोगि है।

याज्ञवल्कय स्मृति, मनुस्मृति, शुक्रनीति, अर्थशास्त्र की तरह इस ग्रन्थ में कविने राजनीतिक, व्यावहारिक, सामाजिक और धार्मिक विषयों की चर्चा की है। कविने इस ग्रन्थ को धर्म, अर्थ और काम जैसे तीन विभागों में बाँट कर, मानवजीवन से

संबंधित विषयोकी चर्चा की है । समग्रतया अभ्यास से स्पष्ट होता है कि यह ग्रन्थ श्रेष्ठ समाज निर्माण में सहायक बन सकता है इसलिए यह ग्रन्थ का सामाजिक दृष्टि से अनन्य महत्त्व सिध्ध हो सकता है ।

ENCLOUSER: 4

[17] No. of Publications Out of the Project – I have prepared 4 (four) Article from this recent minor project. These articles enclosed after this page. Please check it.

Name of Articles:

- "(Laghu) Arhanniti ma Prayaschit Vichar "- International Journal of Research in all Subject in Multi Languages (IJRSML), Vol.3, Issue:10, Nov-Dec-2015, ISSN : 2321-2853, Page No: 10-18. (**Paper Present in National Seminar, March 7, 2016**)
- "Hemchandracharya Virachit '(Laghu) Arhanniti ma Vyavharvidhi' "- HAIM-PRAPA- A Research Journal of Dept. of Sanskrit & Bhartiyavidya H.N.G.U. Patan, Gujarat , Vol.6, Feb-2015, ISSN: 2250-3064, Pg.No: 86-101. (**Paper Present in National Seminar, Feb-21-23,2015**)
- "Hemchandracharya Virachit '(Laghu) Arhanniti ma Stri-Purush Dharm : Pravartman Sandarbhma' "- Research Guru (Online Journal of Multi disciplinary Subjects), Vol.5, March-2015, ISSN: 2349-266X, Page No:104-115. (**Paper Present in National Seminar, March 15-17,2015**)
- "Kalikasarvgya Hemchandracharya Virachit '(Laghu) Arhanniti' ma 'Daaybhag' Vichar' "- "- Research Guru (Online Journal of Multi disciplinary Subjects), Vol.9, March-2016, ISSN: 2349-266X, Page No:28-43.

---------- ***** ---------- ***** ----------